UGC APPROVED JOURNAL - 47746

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 10 | October – December 2017

कौटिल्य और उनका अर्थशास्त्र पर एक विवेचना

[1]Vandna Kumari, [2]Dr. Firoz Alam

[1]Research Scholar, Department of A.I.& A.S. M.U., Bodh Gaya

[2]Lecturer of A.I.& A.S. , Alam Iqbal College , Bihar Sharif, M.U., Bodh Gaya

सार

चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री के रूप में चाणक्य के होने की बात कही जाती है, जिसे किन्ही चणक का पुत्र बताया गया है। कुछ लोग इसे मगध और कुछ अन्य तक्षशिला का निवासी बताते हैं। इसी चाणक्य को विष्णुगुप्त और कौटिल्य के रूप में भी चिह्नित किया गया है। चाणक्य के रूप में यह चाणक्य नीति-दर्पण का रचयिता भी है और इसी रूप में संस्कृत साहित्य के इतिहास में इसे रेखांकित किया गया है। लेकिन चाणक्य को वहां 'अर्थशास्त्र ' का रचयिता नहीं बताया गया है। कौटिल्य संस्कृत शब्द है और यह किसी जाति-प्रजाति या देवी-देवता का नहीं, बल्कि एक प्रवृत्ति का परिचायक है। संस्कृत शब्दकोश के अनुसार इस शब्द की उत्पत्ति कुटिल से है, जिससे इसका अर्थ बनता है कुटिलपन, दुष्टता या जालसाज। चाणक्य नाम से तो चाणक्य-नीति सार अथवा दर्पण से लोग परिचित थे, लेकिन कौटिल्य नाम से लोग कोई सवा सौ साल पहले तक पूरी तरह अनभिज्ञ थे। यह 1905 की बात है जब मैसूर ओरिएण्टल गवर्नमेंट लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन रुद्रपत्तन साम शास्त्री को एक पांडुलिपि हाथ लगी, जो उन्हें एक अनजाने से पंडित ने उपलब्ध कराया था। यह 168 पृष्ठों की संस्कृत पांडुलिपि थी, जिसके साथ भद्रस्वामी नामक एक टीकाकार की व्याख्या भी थी।

मुख्य शब्द : अर्थशास्त्र, मैकियावेली, प्रशासनिक, अधिकारियों इत्यादि ।

प्रस्तावना

कौटिल्य के अर्थशास्त्र का सत्ता-सापेक्ष रुख मैकियावेली के 'प्रिंस' से कहीं गहरा और जनविमुख है। प्रथमदृष्टया प्रतीत होता है कि यह राज्य (स्टेट) को सर्वोपरि मानता है और तमाम चीजें, चाहे वे धर्म हों, या नैतिकता या कि प्रजा - केवल राज्य के लिए होने चाहिए। ऐसा राज्य आखिर क्यों होना चाहिए? और फिर राज्य किसके लिए होने चाहिए? लेकिन 'अर्थशास्त्र' को इसकी चिंता नहीं है। हर हाल में राज्य-हित, जिसका मतलब सिर्फ कर-संग्रह है, सर्वोपरि है। धर्म और नैतिकता का कोई औचित्य नहीं है। उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं, साधन चाहे जैसे हों। लेकिन राज्य के कुछ मौलिक प्रश्न, जो आज भी प्रासंगिक हैं, हमें इसके महत्व को रेखांकित करने के लिए विवश भी करते हैं। 'अर्थशास्त्र' प्रशासनिक ढाँचे को बहुत महत्व देता है और इसे गतिशील रखने के लिए राजा को तत्पर होने की सलाह देता है। अर्थशास्त्र ने राजा की दिनचर्या भी नियत की है। इसके अनुसार उसे अहले सुबह से देर रात तक पूरे राज-काज के निगरानी की सलाह दी है। प्रशासनिक अधिकारियों के महत्व को वह खूब समझता है और निगरानी रखने के लिए गुप्तचर सेवा को

दुरुस्त करने की बात इसमें दर्ज है, जो व्यावहारिक है। वह चालीस प्रकार के उन तरीकों की चर्चा करता है जिसे राज्य के अधिकारी राजस्व अपहरण के लिए इस्तेमाल करते हैं। कौटिल्य को मालूम है कि प्रशासनिक अधिकारी रिश्वत-खोर और चोर हैं।

कतिपय विद्वानों की भी यही मान्यता है कि 'अर्थशास्त्र ' में चंद्रगुप्त मौर्य के प्रशासनिक ढाँचे की जानकारी है और यह भी कि उसी के अनुरूप मौर्य प्रशासन चल रहा था। लेकिन सच्चाई तो यह है कि पूरे 'अर्थशास्त्र' में चन्द्रगुप्त मौर्य या मगध साम्राज्य की चर्चा भी नहीं है। जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्ध किताब 'ग्लिम्सेस ऑफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री' में अठारहवीं चिट्ठी ही इस अर्थशास्त्र पर है, जिसका शीर्षक है 'चन्द्रगुप्त मौर्य एंड द अर्थशास्त्र'। इस पत्रनुमा आलेख में नेहरू ने जो लिखा है, उससे ऐसा प्रतीत होता है चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रशासनिक ढाँचे और नगर व्यवस्था को कौटिल्य ने सूत्रबद्ध किया है, किन्तु ऐसा नहीं है। संभव है नेहरू ने 'अर्थशास्त्र' को मूल रूप से पढ़ा नहीं हो, केवल उड़ती जानकारी उन्हें हो, अन्यथा वह यह नहीं लिखते –' ...वन रूल फॉर द सिटीज, रिकार्डेड बाई कौटिल्या ...'

मैं पुनः एकबार कहूँगा 'अर्थशास्त्र ' का चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन-व्यवस्था अथवा काल से कुछ भी लेना-देना नहीं है। यह भी नहीं कि अर्थशास्त्र के विजिगीषु (विजय के इच्छुक) राजा के लक्षण चन्द्रगुप्त मौर्य में मिलते हों ,ताकि अनुमान हो सके कि वह कौटिल्य के अनुसार शासन-प्रबंध कर रहा था अथवा उसका शासन-प्रबंध कौटिल्य देख रहा था।

'अर्थशास्त्र' अपने सामाजिक-वैचारिक ढाँचे में 'एक और मनुस्मृति' हैं। मनुस्मृति जिस ब्राह्मणवाद को सामाजिक ढाँचे में शामिल करना चाहती है, अर्थशास्त्र उसी को राजनैतिक ढाँचे में शामिल करने की कोशिश करती है। यदि यह 'अर्थशास्त्र', मनुस्मृति से पहले की रचना हैं, तो कहा जा सकता हैं कि मनुसंहिता की रचना में इसने मार्गदर्शक ग्रंथ की भूमिका निभाई होगी। लेकिन यह शायद सच नहीं हैं। मुझे यही प्रतीत होता हैं कि अर्थशास्त्र पर ही मनुस्मृति की छाया है। अर्थशास्त्र के सामाजिक सरोकार इतने संकीर्ण हैं कि इस बात पर यकीन करना मुश्किल हैं कि कौटिल्य चन्द्रगुप्त का मार्गदर्शक या मंत्री रहा होगा। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन प्रबंध में अर्थशास्त्र की कोई छवि नहीं हैं, बल्कि वह नन्द काल से चले आ रहे शासन-प्रबंध का विकसित रूप प्रतीत होता हैं, जिसकी मेगास्थनीज ने अपनी किताब 'इंडिका ' में चर्चा की हैं। यूँ भी इतिहास के जो प्रचलित आख्यान हैं उसके अनुसार चाणक्य धननन्द से रंज था, न कि उसकी शासन-व्यवस्था से। विशाखदत्त के नाटक 'मुद्राराक्षस' को मान लें, तो धननंद के मंत्री राक्षस से चाणक्य इतना प्रभावित हैं कि मगध और चन्द्रगुप्त के हित के लिए हर हाल में उसे ही मंत्री बनाने के लिए कटिबद्ध हैं और अंततः कूटनीति से इस अभियान में वह सफल हुआ है।

कौटिल्य का कृतित्व

चन्द्रगुप्त मौर्य (ई0पू0 चतुर्थ शताब्दी) के प्रधान अमात्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य तथा भारत के राजाओं को आने वाली पीढ़ी को राजनीति सिखाने के लिए जिन ग्रन्थों की रचना की, उनकी संख्या पांच मानी जाती है:-

- कौटिल्य अर्थशास्त्र - जिसमें 6 हजार श्लोक हैं,
- चाणक्य सूत्राणि - एक हजार श्लोकों में निबद्ध है,
- चाणक्य नीति दर्पण - 248 श्लोक,
- लघु चाणक्य - 108 श्लोक,
- वृद्ध चाणक्य - 205 श्लोक।

चाणक्य का बनाया एक 'नीतिशास्त्रा' भी है जिसके कई संस्करण प्रचलित हैं। जिनमें परस्पर पर्याप्त भेद हैं। भोज द्वारा सम्पादित संस्करण में आठ अध्याय और 576 श्लोक हैं। एक अन्य संस्करण में 16 अध्यायों में 350 श्लोक बराबर विभक्त हैं। इस ग्रन्थ में सभी प्रकार के नीति वचन मिलते हैं। इसकी रचना-शैली आपस्तम्ब सूत्रा, बौधायन-धर्मसूत्रा आदि सूत्रा ग्रन्थों की शैली के अधिक निकट है। इसमें गद्य और पद्य दोनों का मिश्रण होने के कारण ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इसके अलावा सूत्रा तथा भाष्य दोनों एक ही लेखक के लिखे हुए हैं। वैसे कहीं-कहीं उपनिषद् एवं ऊध्वकालीन ब्राह्मणों की भाषा की प्रणाली दृष्टिगोचर होती है। ग्रन्थ में आदि से लेकर अन्त तक एक ही क्रम अपनाया गया है और समस्त ग्रन्थ पूर्व नियोजित योजना के आधार पर लिखा गया है। इस प्रकार से समस्त ग्रन्थों में एक आश्चर्यजनक एकरूपता के दर्शन होते हैं।

अर्थशास्त्र का प्रतिपाद्य

कौटिल्य का अर्थशास्त्र विश्व के राजशास्त्राीय और अर्थशास्त्रीय ग्रन्थों में मूर्धन्य माना जाता है। यह नितान्त यथार्थपरक और व्यावहारिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कुल 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 150 विषय हैं। एक व्यक्ति का ग्रन्थ होने के कारण इसमें अनुक्रम तथा व्यवस्था है। इस ग्रन्थ में एक स्थान पर लिखा है-"सब शास्त्रों का अनुशीलन करके और प्रयोग द्वारा कौटिल्य ने नरेन्द्र चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए शासन की यह विधि बतायी है।

एक राजा के लिए सांख्य, योग, लोकायत के दार्शनिक विचार, वेदांगों में वर्णित चारों वर्णों के कर्तव्य, देश की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक दशा, चरवाहों के कर्तव्य, व्यापार, उद्योग नीति, दण्ड नीति आदि का ज्ञान रखना आवश्यक है। इसके साथ ही राजा के आन्तरिक एवं बाह्य कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए मन्त्राी तथा गुप्तचरों का वर्णन किया गया है। क्योंकि राजकार्य सहायता के बिना सिद्ध नहीं हो सकता, एक पहिए से राज्य की गाड़ी नहीं चल सकती, इसलिए राजा को परिषद् व सचिवों की नियुक्ति करनी चाहिए। परिषद् में केवल ऐसे ही व्यक्तियों को नियुक्त किया जाये जो "सर्वोपधाशुद्ध" हों अर्थात् सब प्रकार के दोषों-निर्बलताओं से रहित हों। परिषद् के अमात्य राजा की शासन में सहायता तो करते ही थे, मन्त्राी के अतिरिक्त पुरोहित का पद भी शासन में अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इनके अतिरिक्त शासन सत्ता के अन्य महत्वपूर्ण पद ये थे- समाहर्ता, सन्निधाता, सेनापति, युवराज, प्रदेष्टा, नायक, व्यावहारिक, कर्मान्तिक, दण्डपाल, दुर्गपाल आदि।

उस समय दूत और चर-व्यवस्था पर अत्यधिक ध्यान था। दूत की आवश्यकता, आचरण एवं व्यवहार, कर्तव्य, विशेषाधिकार तथा दूतों के विविध प्रकारों आदि का विस्तृत तथा उपयुक्त विवेचन अर्थशास्त्र के पहले, चौथे और बारहवें अधिकरण में है। चर को राजा की आँख कहा गया है। कौटिल्य ने चरों के नौ प्रकार बताते हुए उनके कर्तव्यों का विवेचन किया है। दूसूसूसरे अधिकरण में राज्य का कार्यभार संभालने वाले विभिन्न अध्यक्षों और अधिकारियों का विस्तार से वर्णन हुआ है। तीसरे अधिकरण में कानूनों का विस्तृत विवेचन है। कौटिल्य ने धर्मसंघीय और कण्टकशोधन न्यायालयों के गठन, अधिकार और कर्तव्य का विस्तार से विवेचन किया है। धर्मसंघीय न्यायालयों में व्यक्तियों के आपस के मुकदमे पेश होते थे, इसके विपरीत कण्टकशोधन न्यायालय में वे मुकदमे उपस्थित होते थे जिनका सम्बन्ध राज्य से होता था। चौथे अधिकरण में पुलिस द्वारा धोखा-धड़ी करने वालों को पकड़ने तथा समस्त छल-कपट के कार्यों का वर्णन है। पांचवें अधिकरण में अपकारी मंत्राी से राजा के बचने तथा कर-विधान एवं कोष में धन-संग्रह की विधियों का विवेचन है। छठे अधिकरण में राजनीति के सात अंगों का उल्लेख है।

प्राय: सभी राजनीतिशास्त्राज्ञों ने राज्य के सात अंग बतलाये हैं-स्वामी, अमात्य, जनपद या राष्ट, दुगर्, कोश, दण्ड एवं मित्रा। अंगो को पकूरति भी कहा जाता है। सातवें अधिकरण में शान्ति, युद्ध, तटस्थता, युद्ध की तैयारी, सन्धि, संदेहात्मक व्यवहार आदि के कारणों का उल्लेख है। आठवें अधिकरण में शिकार, जुआ, स्त्राी, शराब, आग, पानी आदि द्वारा राजा को कैसी-कैसी विपत्तियों का सामना करना पड़ता है, इन सभी बातों का वर्णन है। नवें अधिकरण में युद्ध का वर्णन है। दसवें अधिकरण में युद्ध विषयक शकुन आदि का वर्णन है। ग्यारहवें अधिकरण में द्वारा शत्रु -विनाश का वर्णन है। बारहवें अधिकरण में शत्रु पर विजय प्राप्त करने की अनेक युक्तियां बताई गई हैं। तेरहवें अधिकरण में राजा को अपने शत्रु के नगर को जीतने के लिए किस प्रकार अपने को सर्वशक्तिशाली घोषित करना चाहिए, इन सभी साधनों का उल्लेख है। चोदवे अधिकरण में कुछ असाधारण बातों का वर्णन है, जैसे-एक व्यक्ति एक माह तक बिना भोजन किए रह सकता है, कैसे वह आग पर चल सकता है। पन्द्रहवें अधिकरण में कार्य-योजना का विस्तृत वर्णन है।

इस प्रकार अर्थशास्त्र, राजशास्त्रीय एवं अर्थशास्त्रीय विषयों का अत्यन्त विशद और व्यावहारिक संहिताबद्ध कोश है। इन विषयों का सैद्धान्तिक और प्रायोगिक निरूपण करने वाला यह ग्रन्थ विलक्षण भारतीय मेधा का निर्विवाद प्रतिष्ठापक है।

अर्थशास्त्र के प्रथम दो अधिकरणो मे प्रतिपादित कुछ मुख्य विषय

1. विद्या चतुष्ठय, 2. इन्द्रियजय अर्थात् अरिषड्वर्ग त्याग, 3. अमात्यों की नियुक्ति और परीक्षा, 4 गुप्तचर और उनके कर्तव्य, 5. मन्त्राज्ञान और उसकी रक्षा, 6. दूतूतूत और उनके कार्य, 7. राजा द्वारा आत्मरक्षा के उपाय, 8. राजा की दिनचर्या और कर्तव्य, 9. जनपद, 10. दुर्ग, 11. नगर, 12. कोष, 13. आय-व्यय का लेखा, 14. शुल्क (चुंगी), 15, अध्यक्ष व उनके कार्य।

उपसंहार

आचार्य कौटिल्य द्वारा विरचित अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ राजनीति और अर्थशास्त्र का ऐसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमें ईसा से तीन शताब्दी पूर्व के एतद्विषयक भारतीय चिन्तन की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं। हमारे प्राचीन चिन्तन के बारे में पाश्चात्त्य विद्वानों का सामान्यत: यही मानना था कि भारत ने विचार क्षेत्रा में तो प्रगति की है, लेकिन क्रिया क्षेत्रा में बुरी तरह असफल रहा है, लेकिन कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आधार पर सिद्ध हो जाता है कि हम भारतीय प्राचीन काल में विचार क्षेत्रा के साथ कार्य क्षेत्रा में भी निपुण थे। इस अर्थशास्त्र में राज्य-प्रबन्ध सम्बन्ध समस्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म विषय वर्णित है; जिनका अध्ययन-मनन करके भारतीय राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि संसार के राजनीतिज्ञ तथा कूटनीतिज्ञ भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। कौटिल्य अर्थशास्त्र की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि इसमें सिद्धान्त एवं क्रिया का समन्वित रूप मिलता है चाणक्य अर्थशास्त्र में नीति सम्बन्धी अत्यन्त उत्कृष्ट श्लोक सरल भाषा-शैली में निबद्ध हैं। अर्थशास्त्र यद्यपि राजनीति सम्बन्धी ग्रन्थ है, फिर भी इसमें व्यावहारिक सामान्य नीति सम्बन्धी शाश्वत सत्य के द्योतक श्लोक मिलते हैं। इसी कारण आज इस ग्रन्थ का महत्व ग्रीक के अरस्तु अथवा अफलातून के ग्रन्थों से भी अधिक है। अर्थशास्त्र के कर्त्ता और उनका समय राजनीति सम्बन्धी ज्ञान के भण्डार अर्थशास्त्र के लेखक सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री विष्णुगुप्त चाणक्य माने जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] कौटिलीय अर्थशास्त्र, पंचटीका सहित, संपादक-आचार्य विश्वनाथशास्त्रिदातार, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1991

[2] कौटिलीय अर्थशात्त्र, व्याख्याकार-वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2006

[3] कौटिल्य का अर्थशास्त्र : एक ऐतिहासिक अध्ययन-डा0 ओमप्रकाश प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, प्रथम प्रकाशन, 2014

[4] वैदिक अर्थव्यवस्था-डॉ०0 महावीर, समानान्तर प्रकाशन, 7/7, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001

[5] अर्थव्यवस्था-एक दृष्टि, नई दिल्ली ।

[6] राधा कुमुद मुखर्जी, चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल, राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली -1990। पृष्ठ-38 ।

[7] वाचस्पति गैरोला, कौटिलीय अर्थशास्त्रम, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी-2003 । पृष्ठ-205